● **पढ़ो और गाओ :**

६. अक्लमंदी

यहाँ हास्य के माध्यम से कवि ने प्रकृति में जो जिस रूप में है, उसी रूप में स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया है ।

किसी गाँव मिट्ठू नामक, एक मियाँ जी रहते थे ।
बात-बात में खुद को, खूब अक्लमंद कहते थे ।।
बात दुरुस्त न लगे किसी की, आता काम पसंद नहीं ।
नाक चढ़ाकर हिज्जेबाजी, करते रहते जहाँ-कहीं ।।
एक दिवस ससुराल पहुँचने की उसने मन में ठानी ।
कपड़े पहन, उठाकर थैला, फिर सिर पर छतरी तानी ।।
तेज धूप में चलते-चलते तन से स्वेद लगा झरने ।
फाड़-फाड़ कर आँखें मिट्ठू, वृक्ष तलाश लगा करने ।।
पाकर सुंदर वृक्ष आम का, वह आनंद विभोर हुआ ।
उसकी ठंडी छाया में बस, खूब मजे से लेट गया ।।
हरा-भरा खेत पास में, लहर-लहर लहराता था ।
देख-देख वह शोभा उसकी, फूला नहीं समाता था ।।
बड़े-बड़े तरबूज खेत में, देख-देख वह ललचाया ।
कुछ मीठे तरबूज वहाँ से, तुरंत तोड़कर ले आया ।।
खाकर के तरबूज मियाँ ने, ऊपर को जब देखा तो ।
मीठे-मीठे और रसीले, आम लगे थे ऊपर को ।।

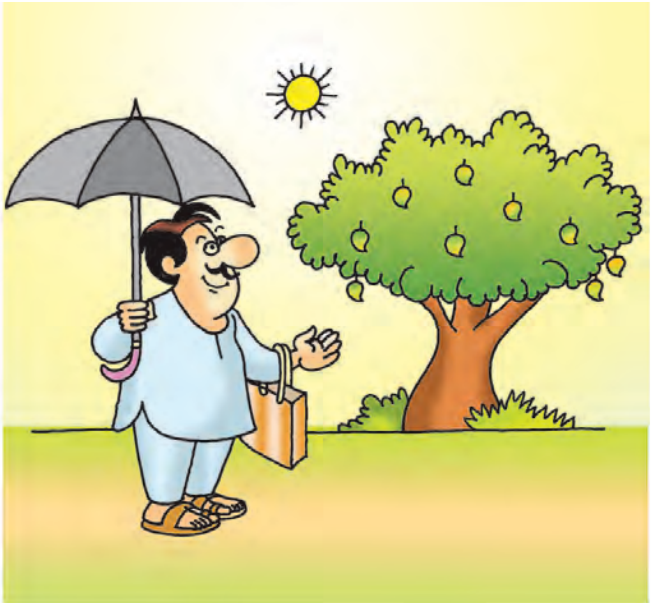

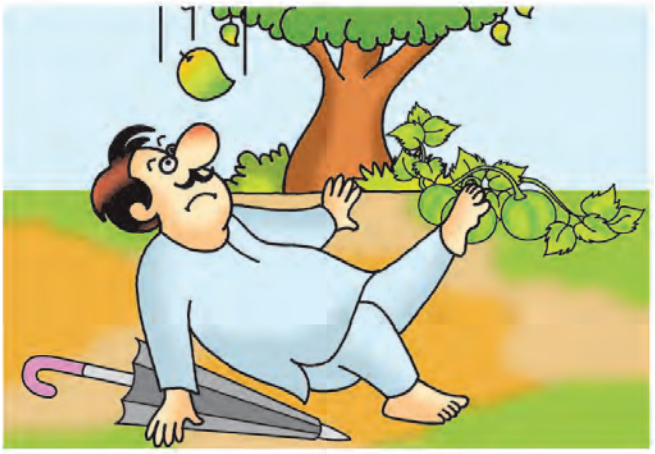

आम तोड़ने चढ़ा गिर पड़ा, लिए तुड़ा घुटने-टखने ।
हाथ न आते देख आम, तब त्योरी तान लगा बकने-
''खुदा बड़ा ही बेवकूफ है, कैसे उसको समझाऊँ ?
अगर कहीं मिल जाए मुझको, तो कच्चा ही खा जाऊँ ।।
देखो, बेवकूफ ने बेलों पर तरबूज लगाए हैं?
कितने छोटे आम, दरख्तों पर ऊँचे लटकाए हैं ।।
अगर खुदा मैं होता तो, सब गलती देता दूर भगा ।
पेड़ों पर तरबूज व बेलों पर चट देता आम लगा ।।''
देता रहा खुदा को गाली, आया मन में खेद नहीं ।
ठंडी हवा चली मिट्ठू को, निधड़क आई नींद वहीं ।।
उसी समय ऊपर से, एक आम अचानक टूट गिरा ।
टूटी नाक मियाँ मिट्ठू की, खून बह निकला बहुतेरा ।।
ऐसी हालत में मिट्ठू से दरद न झेला जाता था ।
फूट-फूट कर रोता था, औ नाक, नाक चिल्लाता था ।।
आँसू और खून की उसके, मुख पर धार लगी बहने ।
हाथ जोड़ फिर रोता-रोता, होकर खड़ा लगा कहने-
''खुदा, बड़े तुम अक्लमंद हो, मुझे लगा है आज पता ।
नहीं बुराई कभी करूँगा, कर दो मेरी माफ खता ।।
अगर आम के बदले ऊपर, ये तरबूज लगे होते ।
मेरा निकल कचूमर जाता, घरवाले किसको रोते?''

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट एवं एकल साभिनय पाठ करवाएँ । अन्य हास्य कविता कक्षा में सुनाने के लिए प्रेरित करें । चुटकुलों एवं हास्यगीतों का संग्रह करवाएँ । कक्षा में पहेलियाँ बुझवाएँ ।